साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

बृहस्पतिवार, 23 फ़रवरी 2017

आज के कार्यक्रम

युवा साहिती

(युवा लेखक सम्मिलन)

पूर्वाह्न 10.00 बजे, ब्लैक बॉक्स, मेघदूत-III

लेखक सम्मिलन

(साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेताओं के साथ)

पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन परिसर

रामचंद्र गुहा द्वारा संवत्सर व्याख्यान

सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन परिसर

सांस्कृतिक कार्यक्रम

लाई हारोबा, माव और काबुई नृत्य

सायं 7.30 बजे, मेघदूत रंगशाला-I

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह

22 फ़रवरी 2017 की शाम को कमानी सभागार, नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता लेखकों को अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी पुरस्कार से विभूषित किया। ये पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त 24 भारतीय भाषाओं के लिए दिसंबर 2015 में घोषित किए गए थे। पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात भौतिक विज्ञानी और मराठी लेखक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर थे। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी पुरस्कृत लेखकों का माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया तथा प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव द्वारा किया गया। अकादेमी के अध्यक्ष ने पुरस्कारप्राप्त 20 लेखकों को अंगवस्त्रम्, ताम्र फलक और एक लाख रुपए की पुरस्कार राशि का चेक प्रदान किए। डोगरी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और सिंधी भाषाओं के पुरस्कृत लेखक किन्हीं कारणों से पुरस्कार ग्रहण करने के लिए उपस्थित नहीं हो सके।

समारोह का आरंभ वंदना से हुआ। तत्पश्चात् अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा कहा की अकादेमी लेखकों का घर है। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अकादेमी के इस मंच और सभागार में पूरा देश उपस्थित है, जो इसकी विशिष्टता है। उन्होंने पुरस्कृत लेखकों को बधाई देते हुए कहा कि मैं पुरस्कार की बजाय सम्मान कहना पसंद करता हूँ, क्योंकि पुरस्कार में धन की गंध आती है, जो एक सच्चे साहित्यकार के लिए तुच्छ है। डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ने कहा कि समाज के मूल्यों और संस्कृति को साहित्य ही संप्रेषित कर सकता है, तकनीकी नहीं; लेकिन साहित्य को तकनीकी की सहायता से बेहतर ढंग से संप्रेषित किया जा सकता है। ज्ञान के प्रभाव को भी केवल साहित्य और साहित्यकारों के द्वारा अभिव्यक्त किया जाना संभव है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी और सभी का आभार व्यक्त किया।

मातृभाषा संरक्षण पर संगोष्ठी

समृद्ध भारतीय भाषाएँ भी संकट में हैं–राहुल देव

22 फ़रवरी 2017 को 'मातृभाषा संरक्षण' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन आरंभ में अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने आमंत्रित विद्वानों और उपस्थित श्रोताओं का औपचारिक स्वागत किया और प्रतिभागियों का परिचय दिया। संगोष्ठी का द्वितीय सत्र प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री राहुल देव, श्री चंद्रप्रकाश देवल एवं श्री अनीसुर रहमान ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री चंद्रप्रकाश देवल ने कहा कि मनुष्य के आविष्कारों में भाषा सबसे अधिक विशिष्ट है। मिर्ज़ा ग़ालिब को संदर्भित करते हुए उन्होंने कहा कि यदि भाषा ख़त्म होती है तो इसके साथ ही व्यक्तिविशेष की पहचान और संस्कृति भी ख़तरे में पड़ती है। श्री राहुल देव ने कहा कि मातृभाषाओं का संरक्षण तभी संभव है, जब हम संबंधित ख़तरे को महसूस करें। जो डरता है, वही बचता है। उन्होंने यूनेस्को द्वारा गहन शोध के पश्चात् निर्धारित नौ सूत्रों का उल्लेख किया, जिनके आधार पर किसी भाषा की स्थिति का आकलन किया जा सकता है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के संदर्भ में आँकड़े देते हुए कहा कि आज़ादी के बार के पिछले छह दशकों में ही हम अपनी सैकड़ों भाषाओं को खो चुके हैं। जिन भारतीय भाषाओं की समृद्धि पर हमें गर्व है, आज वे भी ख़तरे में हैं। उन्होंने भाषायी संतुलन बनाए जाने की ज़रूरत पर बल दिया। श्री अनीसुर रहमान ने कहा कि मातृभाषा के संरक्षण में व्यक्ति, समुदाय और संस्कृति की पहचान का संरक्षण भी निहित है। मातृभाषा को संरक्षित करने के बहुत-से तरीक़े हो सकते हैं और हैं, लेकिन इसका कोई फ़ार्मूला नहीं है, क्योंकि भाषा को अस्तित्वमान करने के लिए कोई फ़ार्मूला गढ़ना संभव नहीं। इस अवसर पर प्रो. चौधुरी ने कहा कि मातृभाषा के संरक्षण पर प्रायः सौ वर्षों से विमर्श हो रहा है। उन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर के विचारों को संदर्भित किया, जिसमें उन्होंने कहा है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए। उन्होंने माइकेल मधुसूदन दत्त और कुलदीप सलिल की कविताएँ भी उद्धृत कीं और कहा कि देश की भाषा समस्या वास्तव में एक जटिल समस्या है और मातृभाषाएँ चमकीले आभूषण हैं।

इंद्रनाथ चौधुरी

चंद्रप्रकाश देवल

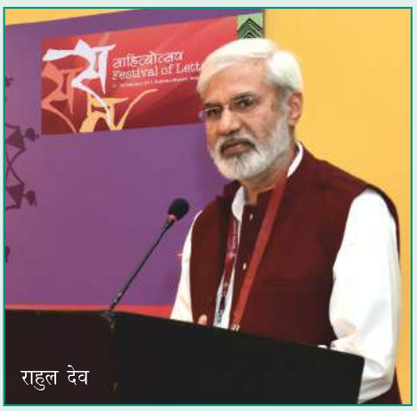
राहुल देव

संगोष्ठी का तृतीय एवं अंतिम सत्र श्री चंद्रप्रकाश देवल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री वासदेव मोही और श्री सा. कंदासामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री देवल ने सत्र की शुरुआत यह कहते हुए की कि मातृभाषाओं का संरक्षण सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण हेतु किए जानेवाले प्रयासों का ही अंग है। श्री वासदेव मोही ने भी इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषाओं के ख़तरे में पड़ने से संपूर्ण समुदाय की पहचान भी ख़तरे में पड़ी है। उन्होंने कहा कि मातृभाषाओं में शिक्षा ग्रहण करनेवाले बच्चे दूसरी भाषाओं में शिक्षा ग्रहण करनेवालों से कहीं बेहतर होते हैं। श्री सा. कंदासामी ने बताया कि एक सर्वेक्षण के अनुसार 7000 से भी अधिक भाषाओं में से प्रायः 90 प्रतिशत सौ वर्षों में विलुप्त हो जाएँगी, जो सोचनीय है। उन्होंने कहा कि भाषा ध्वनिमात्र नहीं होती, बल्कि यह संस्कृति, दर्शन की विरासत, साहित्य और सभ्यता के संपूर्ण ज्ञान का आधार होती है। दोनों ही सत्रों के दौरान सुधी श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति रही और विद्वानों ने उनके प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर भी दिए।

अनीसुर रहमान

वासदेव मोही

सा. कंदासामी

सम्मान समारोह की झलकियाँ

लेखक से भेंट : रूपा बाजवा

साहित्योत्सव के दौरान पहली बार अकादेमी की प्रतिष्ठित कार्यक्रम शृंखला 'लेखक से भेंट' का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत प्रतिष्ठित भारतीय अंग्रेज़ी की लेखिका श्रीमती रूपा बाजवा को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम में भारतीय भाषाओं के शीर्षस्थ लेखकों को उनकी रचनात्मक यात्रा पर व्याख्यान के लिए कहा जाता है, जहाँ व्याख्यान के पश्चात् सुधी श्रोता उनके जीवन और साहित्य को लेकर सवाल भी पूछते हैं। श्रीमती रूपा बाजवा को उनके उपन्यास *द साड़ी शॉप* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया था, जो समाज में सत्ता के समीकरणों तथा हाशिए पर खड़े लोगों के जीवन को चित्रित करता है।

श्रीमती रूपा बाजवा ने कहा कि चेखव और मंटो उनके प्रिय लेखक हैं तथा वे बहुत से अन्य भारतीय, यूरोपीय एवं रूसी लेखकों के साहित्य से भी प्रभावित हुई हैं। वे स्वयं भी एक हाशिए के समाज से आती हैं और उनके लिए आवाज़ उठाना अपना कर्त्तव्य समझती हैं। उन्होंने कहा कि वे छोटे शहर संज्ञा की अपेक्षा हाशिए के शहर कहे जाने के पक्ष में हैं। अंग्रेज़ी को ऊँची अट्टालिकाओं से नीचे उतरकर आम जनता तक पहुँचना चाहिए, ताकि वे अपनी दुनिया को अंग्रेज़ी में भी खोज सकें। उन्होंने सवाल उठाया कि मेट्रोपोलिटन समाज यह क्यों तय करे कि कौन लिखेगा? उन्होंने बताया कि उनका जीवन बहुत कठिनाइयों से गुज़रा है। युवावस्था में जब वह इंजीनियरिंग की छात्रा थीं, उन्हें अपना शहर अमृतसर छोड़ना पड़ा। उनकी पुस्तक *द साड़ी शॉप* ने उन्हें पर्याप्त प्रतिष्ठा और पहचान दिलाई, जिसे अनेक पुरस्कार मिले। यह पुस्तक 2004 में साड़ी की दुकान में काम करनेवाले सहायक रामचंद्र के जीवन के माध्यम से एक छोटे शहर की जटिलताओं को उजागर करती है, जो उनका गृहनगर है।

साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

सांस्कृतिक कार्यक्रम

संध्या पुरेचा के निर्देशन में गीत गोविंद पर आधारित 'अष्टनायिका' की भरतनाट्यम प्रस्तुति

साहित्योत्सव के कार्यक्रम

24 फ़रवरी 2017 (शुक्रवार)

आमने-सामने (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों से बातचीत) (मेघदूत रंगशाला-III, पूर्वाह्न 10.00 बजे)

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

सांस्कृतिक कार्यक्रम : बाउल गान (मेघदूत रंगशाला-I, सायं 6.00 बजे)

25 फ़रवरी 2017 (शनिवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)

आदिवासी लेखक सम्मिलन (पैनल चर्चा, आदिवासी सृजन मिथकों का सस्वर पाठ एवं आदिवासी भाषा कवि सम्मिलन) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)

आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए मैजिक शो, कहानी की नाटकीय प्रस्तुति एवं कहानी लेखन, निबंधा लेखन प्रतियोगिताएँ आदि) (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

सांस्कृतिक कार्यक्रमः संताली नृत्य (मेघदूत रंगशाला-I, सायं 6.00 बजे)

26 फ़रवरी 2017 (रविवार)

लोकसाहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी) (साहित्य अकादेमी सभागार, पूर्वाह्न 10.00 बजे)

अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.30 बजे)

भारत की अलिखित भाषाएँः परिसंवाद (रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 11.00 बजे)

साहित्य अकादेमी

रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001

दूरभाष : 011 23386626/27/28, फ़ैक्स : 011 23382428

ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

फ़ेसबुक : http://www.facebook.com/Sahityaakademi